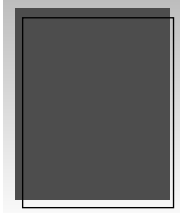

गोविंद पाल

मो. 7587168903

अब तक किसी नहीं सुनी

तितलियों के पीछे
अब भागने को मन नहीं करता
कोयल की कूक,भौरे की गुंजन
कुछ भी नहीं भाता
पतझड़ के इस मौसम में
बसंत बहारों के गीत कैसे गाऊं।

संक्रमण काल के इस विषम दौर में
फटासी शब्दों के चक्र बनाकर
नहीं थपथपाना चाहता हूं अपनी पीठ।
मैं उन अभिव्यक्तियों के साथ रहना चाहता हूं
जिससे महसूस किया जा सके
किसी के भूख की तड़प को,
मैं उनके दर्द में शामिल होना चाहता हूं
जिनसे छीना गया रोटी का हक
जिनके अरमान महलों में कैद है
सर पर जिनके छत तक नहीं है,
मैं भी जलना चाहता उन बहुओं के साथ
जो दहेज के दावानल में जला दी जाती हैं।
मैं उन बेबी हालदारों का दर्द
दुनिया के सामने लाना चाहता हूं
जिनको अब-तक कोई प्रबोध कुमार नहीं मिला।

मैं उन सारी संवेदनाओं में विलीन हो जाना चाहता हूं
और लिखना चाहता हूं
कुछ कविताएं उनके लिए
जिनके चीखों की गूंज
अब तक किसी ने नहीं सुनी।

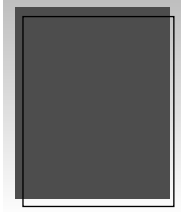

मधुमिता

शोधार्थी
प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता
मो. 8902163805

भूख

छोड़ो लिखना भूख, भूख
और चिल्लाना तो बिल्कुल नहीं भूख, भूख, भूख
अगर सर्वेश्वर होते
तो क्या कह पाते कि भूखा मनुष्य
सबसे सुन्दर होता है?
नहीं, बिल्कुल नहीं
खौफ़नाक हो गया है भूखा व्यक्ति
बेहद खौफ़नाक
क्योंकि बदल दिये है तुमने अब
भूख के मायने
हावी है तुमपर पेट के भूख की अपेक्षा
स्त्री जिस्म की भूख
इस शारीरिक भूख का पेट निरन्तर बढ़ रही है
जिसके लिए कोई सौ साल की वृद्धा हो
या तीन साल की बच्ची
कोई कैंसर पीड़िता हो,
कोई गरीब या लाचार लड़की
और अंधकार होते ही बहन या माँ
को भी लीलने को तत्पर ये भूख
तुम चुप हो
और मुझे मालूम है इसका कारण
तुम आदि हो गये हो
बारम्बार इस भूख को
देखने के
सुनने के
तो कभी स्वयं की भूख मिटाने को
घोट लिया है इसने तुम्हारी संवेदना को
और निरस्त कर दिया है तुम्हें
तुम्हारी अपनी भूख ने ।।। ❖